विषयानुक्रम

		पृ०
१.	आगम युग का जैन न्याय	1
	प्रमेय की सिद्धि प्रमाणाधीन	1
	प्रमाण संख्या	2
	उपादान के नानात्व से प्रमाण का नानात्व	2
	न्याय की परिभाषा	6
	जैन न्याय के तीन युग	7
	आगमयुग का जैन न्याय	8
	ज्ञान का स्वरूप	10
	ज्ञान का मूल स्रोत और उत्पत्ति	10
	ज्ञान की सीमा	11
	इंद्रियज्ञान और प्रमाणशास्त्र	12
	प्रश्न और उत्तर	13
२	दर्शनयुग का जैन न्याय	17
	आगम और हेतु का समन्वय	18
	अहेतुगम्य पदार्थ	21
	हेतुगम्य पदार्थ	21
	ज्ञान का प्रमाणीकरण	22
	प्रत्यक्ष प्रमाण की सम्पर्कसूत्रीय परिभाषा ..	23
	अनेकान्त-व्यवस्था और दर्शन-समन्वय .	26
	समन्वय के आयाम	28
	प्रश्न और उत्तर	31
३.	अनेकान्त व्यवस्था के सूत्र	36
	सामान्य और विशेष का अविनाभाव	36
	नित्य और अनित्य का अविनाभाव .	38
	अस्तित्व और नास्तित्व का अविनाभाव	41
	वाच्य और अवाच्य का अविनाभाव	43
	अनेकान्त का व्यापक उपयोग .	43

	अस्ति-नास्ति का अविनाभाव	....	44
	नित्य और अनित्य का अविनाभाव	... ...	45
	द्रव्य और पर्याय के भेदाभेद का अविनाभाव		46
	एक और अनेक का अविनाभाव	...	47
	अनेकान्त फलित और समस्याए	.	48
४	नयवाद अनन्त पर्याय, अनन्त दृष्टिकोण	.	50
	संग्रह और व्यवहार नय	. ...	50
	नैगमनय	..	51
	ऋजुसूत्रनय		53
	शब्दनय	. .	55
	समभिरूढनय		56
	एवंभूतनय	...	58
	नय की मर्यादा	.	58
	निक्षेप	.. ...	59
	नय और निक्षेप	.. .	61
	प्रश्न और उत्तर	.	63
५	स्याद्वाद और सप्तभंगी न्याय	... ...	66
	स्याद्वाद के फलित	. .	73
	प्रश्न और उत्तर	...	77
६.	प्रमाण-व्यवस्था	..	81
	प्रमाण की परिभाषा	. ..	81
	प्रामाण्य और अप्रामाण्य	. .	85
	प्रमाण का फल		87
	प्रमाण का विभाग	.. .	88
	स्मृति	.	96
	प्रत्यभिज्ञा	.	97
	तर्क	...	99
	आगम	.	100
	प्रश्न और उत्तर	.. .	102
७	अनुमान	. .	104
	हेतु	. ...	106
	हेतु के प्रकार	.. ...	107
	अवयव-प्रयोग	....	107

८ अविनाभाव 113

अविनाभाव (व्याप्ति) को जानने का उपाय 115

प्रश्न और उत्तर 121

९ भारतीय प्रमाण-शास्त्र के विकास में जैन परम्परा का योगदान .. 123

दर्शन और प्रमाण-शास्त्र नई सभावनाए . 127

परिशिष्ट

1 प्रमाणो के विभिन्न प्रकार 133

2 व्यक्ति, समय और न्याय रचना 139

3 न्याय-ग्रन्थ के प्रणेताओ का सक्षिप्त जीवन-परिचय .. 145

4 पारिभाषिकशब्द-विवरण 161

5 प्रयुक्तग्रन्थ सूची 173